International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-11-2019; Accepted: 12-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; Janauary 2020; Page No. 17-22

असमिया लेखिका इन्दिरा गोस्वामी का साहित्यिक व्यक्तित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मिनहाज अली

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी, भारत

सारांश

आधुनिक असमिया साहित्य में इंदिरा गोस्वामी का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है। परन्तु साहित्य जगत में उन्हें मामोनी रायसम गोस्वामी नाम से जाना जाता है। क्योंकि उन्होंने अपना लेखन कार्य इसी नाम से किया था। उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की शुरुआत स्कूली जीवन से ही हुई और जीवन के अंतिम क्षणों तक उन्होंने अपना लेखन कार्य जारी रखा। गोस्वामी का जीवन बहुत संघर्षमय रहा। फिर भी उन्होंने अपने जीवन से हार नहीं मानी, बल्कि संघर्ष, साहस और आत्मबल के सहारे साहित्य को जीवन जीने का एकमात्र लक्ष्य बनाया। उन्होंने समाज में जो देखा, भोगा वही अपने लेखन के द्वारा पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने कष्टपूर्ण जीवन को झेलते हुए भी असमिया साहित्य जगत को बहुमूल्य रचनाएँ दी। इस प्रकार उनकी नि:स्वार्थ साहित्य सेवा के लिए उन्हें सन् 2000 ई. में भारतीय साहित्य का सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। वे भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित असम की द्वितीय साहित्यकार और एकमात्र असमिया लेखिका हैं।

मूल शब्द: आधुनिक, इंदिरा गोस्वामी, व्यक्तित्व, असमिया

प्रस्तावना

किसी भी साहित्यकार के साहित्य का विचार-विश्लेषण करने से पहले उस साहित्यकार का जीवन वृत्त और कृतित्व को जानना अत्यंत आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है। क्योंकि उनके कृतित्व में ही उनका व्यक्तित्व प्रतिफलित होता है और व्यक्तित्व के निर्माण में उसके पारिवारिक परिवेश और समाज की अहम् भूमिका होती है। अत: इस शोध आलेख में इंदिरा गोस्वामी के साहित्यिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

इंदिरा गोस्वामी का जन्म 14 नवम्बर सन् 1942 ई में दक्षिण कामरूप के पलाशबारी अंचल के अमरंगा नामक एक छोटे-से गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम उमाकान्त गोस्वामी और माता का नाम अम्बिका देवी था। उनके पिता अमरंगा सत्र अर्थात वैष्णव मठ के सत्राधिकार के पुत्र और एक शिक्षाविद थे। बचपन में इंदिरा गोस्वामी को घर में मामोनी नाम से बुलाते थे। और उन्होंने मामोनी रायसम गोस्वामी नाम से लेखन कार्य प्रारंभ किया और बाद में मामोनी रायसम गोस्वामी नाम से ही साहित्य जगत में अपनी पहचान बनायी। सन् 2011 असम के लिए बहुत ही दु:ख दायक समय रहा। क्योंकि इसी वर्ष असम के दो महान व्यक्तियों का निधन हो गया था। सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका के निधन के सदमें से उबरने की कोशिश कर ही रहा था कि नवंबर महीने की 29 तारीख सुबह मामोनी रायसम गोस्वामी का निधन हो गया। इन दो महान व्यक्तियों के निधन से असम ही नहीं बल्कि भारतवर्ष के संगीत और साहित्य जगत में बहुत क्षति हुई।

असम ज्योतिष विद्या का जन्म स्थान माना जाता है। इंदिरा गोस्वामी के घर के चारों ओर का परिवेश भी इससे प्रभावित था। यहाँ तक कि उनकी माँ भी ज्योतिष शास्त्र पर विश्वास रखती थी। गोस्वामी जब छोटी उम्र की थी तब एक ज्योतिषी ने भविष्य वाणी की थी कि- "एइ छोवाली जनीर ग्रह इमानेइ बेया जे ताइक दो खंड कै काटि ब्रह्मपुत्रत दलियाइ दिले है आपूनि निस्तार पाब।" (इस लड़की के ग्रह में इतना दोष है कि उसके दो टुकड़े करके ब्रह्मपुत्र नदी में फेंक देने से ही आप लोगों का भला है।) परन्तु वे अपनी बुद्धि, मेहनत और कर्म के बलबूते पर सफलता के उसशिखर तक पहुँच गयी थी कि ज्योतिषी की वाणी को गलत साबित कर दिया। उनकी सफलता को देखकर वही ज्योतिषी ने फिर से कहा था कि- "कल्पनार एने एक शिखर ढूँकि पोवाटो केवल तोमार भाबे है हंबभ। तोमार जीवनर एइ अभाबनीय रुपान्तरर आरत निश्चय एक अनिर्बचनीय जातिष्कार अस्तित्व आछे।" (कल्पना की इस शिखर या चोटी पर पहुँचना केवल तुम्हारे लिए ही संभव है। तुम्हारे जीवन में इस तरह के अकल्पनीय बदलाव के आड़ में निश्चय ही एक उज्ज्वल भविष्य है।)

आधुनिक असमिया साहित्य के प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित एवं प्रतिभाशाली साहित्यकारों में इंदिरा गोस्वामी का विशिष्ट स्थान है। परन्तु साहित्य जगत में उन्हें मामोनी रायसम गोस्वामी नाम से जाना जाता है और

उन्होंने अपना लेखन कार्य इसी नाम से किया। गोस्वामी को केवल असमिया साहित्य में ही नहीं बल्कि उनकी गिनती भारत के प्रमुख साहित्यकारों में की जाती है। कोई भी रचनाकार जब अपनी रचनाओं के माध्यम से आम जनता के दुख-दर्द, आशा-आकांक्षा, राग-विराग, संघात-संघर्ष को निचोड़कर पाठकों के सामने लाता है, तब उसका साहित्य क्षेत्र सार्वदेशिक और सार्वकालिक बन जाता है। इन्दिरा गोस्वामी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इस विशिष्टता से युक्त है।

इंदिरा गोस्वामी के साहित्यिक व्यक्तित्व की शुरूआत स्कूली जीवन से ही हुआ था, जब वे गुवाहाटी के तारिणी चरण बालिका विद्यालय में पढ़ती थी। उस समय वे अनेक कहानियाँ लिख चुकी थी, जिसमें 'बीजाणू', 'परशमणी', 'हेइ आंधार पोहररो अधिक', 'संधि', 'बैरागी भोमूरा' आदि जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थी। कॉटन कॉलेज में पढ़ाई के दौरान ही उनका पहला कहानी संग्रह 'चिनाकि मरम' सन् 1962 ई. और गुवाहाटी विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान उनका द्वितीय कहानी संग्रह 'कइना' सन् 1966 ई में प्रकाशित हुआ था। वे अपनी कहानियों में पाठकों को भावुकता की बजाए संवेदनशीलता से बांध लेती थी। उनकी कृतियों के विस्तृत फलक में मनुष्य जीवन के वैविध्य और विलक्षणता के साथ मौजूद है। उनकी कहानियों में यथार्थ, सूक्ष्म अंतर्दृष्टि और गहरी काव्यात्मक संवेदना का संगम है। वे मन में जो सोचती थी वही लिखती थी-"I try to write from the direct experiences of my life. I only mould these experiences with my imagination." वे 27 साल की उम्र में ही आत्म जीवनी 'आधालेखा दस्तावेज' लिख चुकी थी। उनके साहित्यिक कार्य को देखकर एक साक्षात्कार में उनसे सवाल किया गया था कि क्या आप साहित्य सृजन को अपनी जीविका के रूप में मानते हैं? इसके उत्तर में उन्होंने कहा था कि- "जीविका ? साहित्य रचना मोर भाबे अनुराग, ऊध्यम आरु निचा। वृत्ति नहय। मोर वृत्ति गवेषणा, शिक्षकता।" (जीविका, साहित्य सृजन करना मेरे लिए अनुराग, उद्यम और नशा है। वृत्ति नहीं। मेरी वृत्ति गवेषणा और शिक्षकता हैं।) और वे आगे कहती है कि-"लिखिब नोवारिले मई मृत्युवरण करिलो हेतेन। लेखाइ मोक जीयाइ राखिछे। मोर अनुभूतिबोरर प्रकाश लेखार माध्यमेरेइ हय आरु मइ जीयाइ थाकिबलै हक्षम हऊ।" (यदि मैं नहीं लिख पाती तो मर जाती। लेखन कार्य ने ही मुझे जीवित रखा है। मेरी अनुभूतियों का प्रकाश मेरे लेखन से होता है और इसी से जीने की प्रेरणा मिलती है।)

असमिया साहित्य क्षेत्र में इन्दिरा गोस्वामी को मूलत: कथाकार के रूप में जाना जाता है। कथा साहित्य में कहानी और उपन्यास लेखन उनका प्रिय विषय रहा है। उन्होंने असमिया में अनेक उच्चकोटि के उपन्यास और कहानियों की रचना की है। उनकी रचनाओं की उत्कृष्टता इस बात से प्रमाणित हो जाती है कि उनका अनुवाद भारतीय व विदेशी भाषाओं में भी हुआ है। (हिन्दी, पंजाबी, बंगाली, गुजराती, मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बोडो और विदेशी भाषाओं में नेपाली और अंग्रेजी।) जिसके फलस्वरूप उनके साहित्य को केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। समालोचक प्रफुल्ल कटकी ने गोस्वामी की दो किताबों का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। इंदिरा गोस्वामी से परिचित होने से पहले ही वे 'नीलकंठी ब्रज' उपन्यास पढ़ चुके थे। वे उपन्यास की नायिका के चरित्र से बहुत प्रभावित हुए और गोस्वामी से कहा था कि-"I almost fell in love with the heroin of the book." उनकी अंग्रेजी में अनूदित कहानी 'ऑफ स्प्रिंग' 'इंडियन लिटरेचर' नामक अंग्रेजी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। गुजरात के प्रसिद्ध लेखक गुलाब दास ने उस कहानी को पढ़कर एक पत्र लिखा था कि- "मैंने आपकी कहानी 'ऑफ स्प्रिंग' बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ी है और उसमें समाहित शक्ति को महसूस किया है। उसका अंतिम भाग इतना प्रभावशाली है कि सम्पूर्ण सत्ता को झकझोर के रख देता है। यह एक ऐसी कहानी है जो वर्षो तक भुलाई नहीं जा सकेगी। आप एक साहसी महिला हैं और साहसी लेखिका भी।" उनकी यही कहानी 'ऑफ स्प्रिंग' और कविता पढ़कर पंजाब के प्रख्यात लेखक डॉ. हरभजन सिंह ने पत्र लिखा था कि- "यह एक बहुत ही विशिष्ट प्रकार की कहानी है जिसके ताने-बाने में सुन्दर प्रतिबिम्बों का समावेश किया गया है। मुझे दोनों ही पढ़कर बहुत अच्छे लगे, कहानी भी और कविता भी। आप एक बहुत ही संवेदनशील हृदय और शक्तिशाली कलम की धनी हैं। आप भारतीय साहित्य को बहुत कुछ योगदान करेंगी।" इंदिरा गोस्वामी के इस प्रकार के नि:स्वार्थ साहित्य सेवा के लिए उन्हें सन् 2000 ई में भारतीय साहित्य का सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। वे भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित असम की द्वितीय साहित्यकार और एकमात्र असमिया लेखिका हैं।

इंदिरा गोस्वामी के पति माधवन रायसम आयंगर एक दक्ष इंजीनियर थे। जिसके कारण उन्हें अनेक दुर्गम जगह और वर्क साइट में काम करने वाले मजदूरों को करीब से देखने का मौका मिला था। उन श्रमिक-मजदूरों के दुख-दर्द, उनके रहन-सहन, ठेकेदार द्वारा किये गये आर्थिक शोषण आदि को विषय-वस्तु के रूप में लेकर 'चेनाबर स्रोत', 'अहिरन', मामरे धरा तरोवाल नामक उपन्यास लिखा, जिसमें मजदूर जीवन उभरकर सामने आया। वृंदावन के ब्रजधाम में रहने वाली विधवाओं के दुख-दर्द, उन पर किये गये सामाजिक और धार्मिक शोषण आदि को नजदीक से देखा और भोगा भी। क्योंकि गोस्वामी खुद एक विधवा नारी थी। इसलिए वे विधवाओं की गाथा को भली-भाँती जानती थी। और इन्हीं अनुभवों से उन्होंने 'नीलकंठी ब्रज' और 'दताल हाथीर उये खोवा हाउदा' उपन्यासों की रचना की। जिसमें विधवाओं की जीवन गाथा का चित्रण है। गोस्वामी का जन्म एक सनातनी हिन्दू गोसाई परिवार में हुआ, जो एक सत्र अर्थात वैष्णव मठ का अधिकारी था। इसलिए गोस्वामी धार्मिक रीति-रिवाज, परंपरा, बलि प्रथा, धार्मिक संस्थानों के संरक्षकों के आचरण आदि से

वाकिफ़ थी और 'छिन्नमस्तार मानुटो' उपन्यास की रचना की। इस उपन्यास में विश्व विख्यात कामाख्या मंदिर की समाज-संस्कृति उभरकर सामने आयी। दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान दिल्ली के अली-गली, ऐतिहासिक जगह का भ्रमण, जी.वी. रोड की गली में देह व्यवसाय करने वाली वेश्यओं का जीवन और प्रधान मंत्री इंदिरा गाँधी की हत्या को लेकर दिल्ली में होनेवाला नर संहार आदि का अध्ययन कर वास्तविक अभिज्ञता से 'तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' उपन्यास लिखा था। अत: इंदिरा गोस्वामी वास्तविक व्यक्तित्व से परिपूरित लेखिका थी। उन्होंने जो देखा, परखा, भोगा वही अपने साहित्य का आधार बनाया। उनकी इस बहुमुखी प्रतिभा को देखकर नवीन चन्द्र शर्मा ने कहा था कि- "मोर दृष्टित मामोनी रायसम आछिल आदर्शवादी, आशावादी, आत्मनिर्भरशील, कर्मविश्वासी, हाहसी और मानवप्रेमी।" (मेरी नजर में मामोनी रायसम गोस्वामी आदर्शवादी, आशावादी, आत्मनिर्भरशील, कर्मविश्वासी, साहसी और मानव प्रेमी थी।) उन्होंने केवल असमिया समाज को ही नहीं बल्कि भारतवर्ष और भारतवर्ष के बाहर के अनेक प्रांतों की विषय-वस्तुओं को भी अपने साहित्य की पृष्ठभूमि का आधार बनाया, जिसमें कश्मीर, दिल्ली, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, नेपाल, मॉरिशस, मलेशिया, सिंगापुर, कुआलालम्पूर, हांगकांग, फ्रांस, पेरिस, आदि है। इस संदर्भ में चंद्रप्रसाद शइकीया ने कहा था कि- "मामोनी रायसम गोस्वामीयेइ एकमात्र आधुनिक गद्य लेखिका जिये सफलतारे असमर चारिसीमार बाहिरर विषय वस्तुको साहित्य सृष्टिर हम्पद करि लैसे। तेउँर बहल दृष्टिभंगी आरु मनर दुरन्त शक्तिरे आमार साहित्यर एक बलिष्ट नतून पदक्षेपके सुचाइछे।" (मामोनी रायसम गोस्वामी ही एकमात्र आधुनिक गद्य लेखिका हैं जिन्होंने केवल असम को ही नहीं बल्कि असम के बाहर की विषय वस्तुओं को भी साहित्य के विषय का आधार बनाया है। उनके देखने का विशाल नज़रियाँ और मन की दुरंत शक्ति ने हमारे साहित्य को एक नयी दिशा प्रधान की।)

इंदिरा गोस्वामी एक सफल अनुवादक भी थी। उनका हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, और बंगला भाषाओं से अनूदित कहानी संग्रह 'कलम' है। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद की कुछ कहानियों का अनुवाद 'प्रेमचंदर चूटि गल्प' नाम से प्रकाशित करवायी है। इसके अलावा भी मलयालम उपन्यास 'Aranazhikanera' का असमिया में अनुवाद 'आधाघन्टा समय' और 'जातक कथा', 'आह्निक' आदि उनकी अनुदित कृतियाँ हैं।

इंदिरा गोस्वामी मानवतावादी लेखिका हैं। वे समाज में मानवता और शान्ति प्रतिष्ठित करना चाहती थी। उनके मानवतावादी विचारों का प्रमाण उनके कथन से ही पता चल जाता है- "मानुहक मानुहेइ अँधकारर परा पोहरलै आनिब पारे, मानुहेइ मानुहक नतून जीवन दान करिब पारे। पृथ्वीवित प्रेम आरु महानूभावताइ एइ काम करिब पारे।" (मनुष्य ही मनुष्य को अंधकार से रोशनी में ला सकते हैं। मनुष्य ही मनुष्य को नयी ज़िन्दगी देता है। पृथ्वी में यह काम सिर्फ प्रेम, सहानुभूति और मानवता से ही हो सकता है।) और यही मानवता और वास्तविकता दोनों का मिश्रण उनकी रचनाओं में भी दिखाई पड़ता है। 'नीलकंठी ब्रज', 'अ-इतिहास', 'यात्रा' और 'परशू पातरर नाद' आदि रचनाओं में मानवता और वास्तविकता का आगाज मिलता है। असम के उग्रवादी संगठन 'संयुक्त मुक्ति बाहिनी' (ULFA) है। एक समय ऐसा था कि इस संगठन के आतंक की आग से असम(झल)रहा था। परन्तु उन्होंने असम के उग्रवादियों के अंतर्मन को समझा और केन्द्र सरकार और उग्रवादियों के बीच शान्ति और आपसी भाईचारा कायम करने के लिए मध्यस्थता की भूमिका निभायी। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को गूंगा-बहरा बना दिया जाता है, जहाँ पुरुष को अपनी इच्छाओं को प्रदर्शित करने का सामाजिक अधिकार है, वहीं स्त्री की आवाज़ को दबा दिया जाता है। वह अपनी इच्छाओं को व्यक्त नहीं कर सकती। नारी को उतने ही अधिकार देना चाहिए, जितने कि पुरुषों को दिए गए हैं। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में नारी पर होने वाले अन्याय-अत्याचार के खिलाफ वे सदैव अपनी आवाज़ कलम द्वारा उठाती रही थी। वह समाज में नारी और पुरुष के समाधिकार की पक्षधर थी।

इंदिरा गोस्वामी का जीवन संघर्षमय था। उन्होंने नाना प्रकार के घात-प्रतिघात में अपना जीवन व्यतीत किया। कम उम्र में ही उनके सिर से पिता का साया उठ गया था। और उसके कुछ ही महीने के बाद उनके चाचा की मृत्यु हो गई, जो उनके लिए अल्पकालीन आघात था। जीवन संघर्ष के इस आघात से उन्होंने हताश होकर आत्महत्या तक करने का प्रयास किया था जिसका जिक्र उन्होंने अपनी आत्मकथा 'आधालेखा दस्तावेज' में किया है। आत्महत्या करने की चेष्टा के बाद गोस्वामी शारीरिक और मानसिक रूप से दुर्बल हो गई थी। उनके इस कार्य से लोग उनके बारे में तरह-तरह की कटु बातें करने लगे और उनका घर से निकलना ही मुश्किल हो गया था। कुछ लोग तो यहाँ तक कहने लगे थे कि- "जरूर किसी के साथ.....। अरे, गर्भ रह गया होगा, तभी तो.....वरना यूँ ही कोई अपनी जान लेने पर उतर आता है भला।"

सन 1965 ई में उन्होंने माधवन रायसम आयंगर से शादी कर अपने वैवाहिक जीवन की शुरूआत की। लेकिन वैवाहिक जीवन में भी गोस्वामी को सफलता नहीं मिली। विवाह के डेढ़ साल बाद ही जीप दुर्घटना में उनके पति का देहान्त हो गया। यह उनके जीवन का सबसे बड़ा आघात था। उनके जीवन की स्वाभाविक जीवन-यौवन, आशा-आकांक्षा की आकस्मिक समाप्ति हो गयी थी। वह पूरी तरह मानसिक और शारीरिक रूप से दुर्बल हो गयी थी। दुनिया की शोक-शान्ति से उनका जी उठ गया था। उसी वक्त असमिया साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार होमेन बड़गोहाँई ने उन्हें एक पत्र लिखा था- "आपका मन इस समय जिस दुस्सह वेदना से भरा हुआ है, उसे मैं समझ सकता हूँ। फिर भी यह जरूर कहूँगा कि शिल्प-सृष्टि की माँग इतनी निष्ठुर है कि वह व्यक्तिगत वेदना या दु:ख की परवाह नहीं करती। साधारण

लोगों को दु:ख के इस अतल सागर में डूबने का पूरा अधिकार है.....दु:ख में मृत-प्राय हो जाने तक का भी, लेकिन आपको नहीं? क्योंकि आप लेखिका हैं, शिल्पी हैं। आपकी मुक्ति का एकमात्र मार्ग है सृष्टि इसी में मुक्ति पाएँगी, दुख से, विषाद से और.....शायद मृत्यु से भी।" इतना सब कुछ घट जाने के बावजूद उन्होंने अपने जीवन से हार नहीं मानी। संघर्ष, साहस और आत्मबल के सहारे साहित्य को जीवन जीने का एकमात्र आधार बनाया और साहित्य के जरिये नयी जिन्दगी की शुरूआत की। वे स्वयं कहती थी कि–"Writing is in my blood, in my veins, If I stop I will die of suffocation. Without my pen I will die."

इंदिरा गोस्वामी की साहित्यिक प्रतिभा और बुद्धिमत्ता को देखकर अनेक साहित्यकार पत्र लिखकर उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित करते थे। इन महान लेखकों में गुजरात के गुलाबदास ब्रोकर, पंजाब के हरभजन सिंह, संस्कृत की विदूषी लेखिका कमला रत्नम, अमृता प्रीतम और असमिया साहित्यकारों में महेश्वर नेउँग, सैयद अब्दूल मलिक, भवेन्द्रनाथ शईकीया, वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य, सत्येन्द्रनाथ शर्मा और होमेन बरगोहाँई आदि गोस्वामी को साहित्य सृजन के लिए उत्साहित करते थे। उभरते हुए कवि नीलम कुमार ने गोस्वामी को कभी न देखा और ना ही कभी उनसे मुलाकात हुई, लेकिन उनकी रचनाओं को पढ़कर प्रभावित हुए और उन्हें एक कविता समर्पित करते हुए लिखा था कि-

"नशे में चूर मैं रात भर
तुम्हें ढूँढता फिरा
झूमता हुआ धरती के साथ
हवा भी आ रही थी संग
कहाँ छिपी हो तुम, किस दुर्ग में निद्रामग्न
हे, मेरे विध्वंसकारी प्रेम की देवी!"

इस प्रकार इंदिरा गोस्वामी का साहित्यक व्यक्तित्व एवं उनकी रचनाओं से हर पाठक प्रभावित है। उनकी सृजनशील प्रतिभा को देखकर बहुत सारे साहित्यकार उन्हें साहित्य सृजन करने की प्रेरणा देते थे।

इन्दिरा गोस्वामी का कृतित्व

इदिरा गोस्वामी ने अपने लेखन कार्य का आरंभ स्कूली जीवन से ही शुरु किया और जीवन के अंतिम क्षणों तक अपना लेखन कार्य जारी रखा। उन्होंने असमिया गद्य साहित्य के लगभग सभी विधाओं में अपने लेखन कार्य की प्रतिभा का परिचय दिया है। उनकी रचनाओं से पाठक समाज बहुत ही प्रभावित है। उनके द्वारा रचित रचनाओं को निम्नलिखित रूप में विभाजित किया जा सकता है।

चुटिगल्प (कहानी संग्रह)- 'चिनाकि मरम' (1962), 'कइना' (1966), 'हृदय एक नदीर नाम' (1990), 'मामोनी रायसमर स्वनिर्वाचित गल्प' (1998), 'मामोनी रायसम गोस्वामीर प्रिय गल्प' (1998)

उपन्यास- 'चेनाबर स्रोत' (1972), 'नीलकंठी ब्रज' (1976), 'अहिरन' (1980), 'मामरे धरा तरोवाल आरु दुखन उपन्यास' (1980), 'दँताल हातीर उँये खोवा हाउदा' (1988), 'संस्कार, उदयभानुर चरित्र इत्यादि' (1989), 'ईश्वरी जखमी यात्री' (1991), 'तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' (1998), 'दशरथी खोज' (1999), 'छिन्नमस्तार मानुहटो' (2001), 'थेंफाख्री तहचिलदारर तामर तरोवाल' (2006)

आत्मकथा- 'आधालेखा दस्तावेज' (1988), 'दस्तावेजर नतून पृष्ठा' (2007)

जीवनी- 'महियसी कमला' (1995), 'माँ' (2008)

अनुवाद- 'प्रेमचंदर चुटिगल्प' (1975), 'आधा घंटा समय' (1978), 'जातक कथा' (1996), 'कलम' (1996), 'आह्निक' (2000)

अंग्रेजी- 'रामायन फ्रॉम गंगा टू ब्रह्मपुत्र' (1996)

संपादना- 'एरि अहा दिनबोर' (1993), 'भारतीय लोकगीत' (Indian Folklore)

इसके अलावा भी इंदिरा गोस्वामी की रचनाओं का अनुवाद भारतीय व विदेशी भाषाओं में हुआ है। जो इस प्रकार से हैं-

हिंदी भाषा में अनूदित रचनाएँ

उपन्यास- 'नीलकंठी ब्रज' (नीलकंठी ब्रज' उपन्यास का अनुवाद है।), 'अहिरन' ('अहिरन' उपन्यास का अनुवाद है।), 'जंग लगी तलवार' ('मामरे धरा तरोवाल' उपन्यास का अनुवाद है।), 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' ('दँताल हातीर उँये खोवा हाउदा' उपन्यास का अनुवाद है), 'अ-इतिहास' ('तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' उपन्यास का अनुवाद है), 'छिन्नमस्ता' ('छिन्नमस्तार मानुहटो' उपन्यास का अनुवाद है)

कहानी- 'देवीपीठ का रक्त', 'संस्कार', 'एक अविस्मरणीय यात्रा', 'खाली सन्दूक', 'द्वारका और उसकी बन्दूक', 'भिक्षापात्र', 'पशु', 'दूर से दीखती यमुना', 'परसू का कुआँ', 'नंगा शहर', 'वंशबेल', 'मोहभंग', 'हिम साम्राज्ञी'

आत्मकथा- 'जिन्दगी कौई सौदा नहीं'('आधालेखा दस्तावेज' का अनुवाद है)

अंग्रेजी भाषा में अनूदित रचनाएँ

'The Shadow of the Dark God and the Sin' ('नीलकंठी ब्रज' उपन्यास का अनुवाद), 'The Rusted Sword' (मामरे धरा तरोवाल उपन्यास का अनुवाद), 'The Moth Eaten Howda of a Tusker' ('दताल हाथीर उये खोवा हाउदा' उपन्यास का अनुवाद), 'Pages Stained with Blood' ('तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' उपन्यास का अनुवाद), 'An Unfinished Autobiography'

(आत्मकथा, 'आधालेखा दस्तावेज' का अनुवाद), 'Selected Works of Indira Goswami'

नेपाली भाषा में अनूदित रचनाएँ

'Abhyantar Dakshin Kamniyo Ko' ('दताल हाथीर उये खोवा हाउदा' उपन्यास का अनुवाद), 'Aardha Vnitta Jivan Jatra' (आत्मकथा, 'आधालेखा दस्तावेज' का अनुवाद)

तेलुगु भाषा में अनूदित रचनाएँ

'Visha Kamrupa' ('दताल हाथीर उये खोवा हाउदा' उपन्यास का अनुवाद)

कन्नड़ भाषा में अनूदित रचनाएँ

'Dakshina Kamrupa Ondu Kathanaka' ('दताल हाथीर उये खोवा हाउदा' उपन्यास का अनुवाद)

बंगला भाषा में अनूदित रचनाएँ

'Marsha Dhara Tarowal' ('मामरे धरा तरोवाल' उपन्यास का अनुवाद), 'Datal Hatir Une Khowda Howdah' ('दताल हाथीर उये खोवा हाउदा' उपन्यास का अनुवाद), 'Rakte Makha Dhuli, Dhusal Prista' ('तेज आरु धूलिरे धूसरित पृष्ठा' उपन्यास का अनुवाद)

साहित्यिक सम्मान व पुरस्कार

साहित्य जगत में इंदिरा गोस्वामी का स्थान निर्विवादित रूप से सुरक्षित है। उन्हें अपनी साहित्यिक उपलब्धियों और नि:स्वार्थ साहित्य सेवा के लिए अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जो इस प्रकार है-

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार (1982, यह पुरस्कार 'मामरे धरा तरोवाल आरु दूखन उपन्यास' अर्थात 'जंग लगी तलवार और दो लघू उपन्यास' के लिए मिला था)
2. असम साहित्य सभा के बिष्णु राभा पुरस्कार (1988)
3. भारत निर्माण राष्ट्रीय पुरस्कार (1989)
4. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के द्वारा प्रदान किया गया सौहार्द पुरस्कार (1989)
5. साहित्य के कथा राष्ट्रीय पुरस्कार (1993)
6. 'दँताल हातीर उँये खोवा हाउदा' उपन्यास के कहानी पर बनी फिल्म 'अदाज्य' पर अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार (1996)
7. कमल कुमारी राष्ट्रीय पुरस्कार (1997)
8. फ्लोरिडा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदान किया गया अंतरराष्ट्रीय तुलसी पुरस्कार (1999)
9. भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार (2000)
10. आहोम कर्ट अव असम के द्वारा प्रदान किया गया महीयसी जयमती पुरस्कार (2000)
11. पद्मश्री पुरस्कार (2002) (यह पुरस्कार स्वीकार नहीं किया था ।)
12. शान्तिदूत पुरस्कार (2006) (कोरिया राष्ट्र के द्वारा प्रदान किया गया इन्टरनेशनल फेडरेशन फॉर वर्ल्ड पिच पुरस्कार)
13. नीदरलैंड सरकार के द्वारा प्रदान किया गया यूरोप का सर्वोच्च पुरस्कार 'प्रिंस क्लॉज पुरस्कार' (2008)
14. कलकत्ता के एसियाटिक सोसाइटी के द्वारा प्रदान किया गया ईश्वरचन्द्र विद्यासागर सोने का पदक (2008)
15. असम साहित्य सभा के कृष्णकान्त सन्दिकै पुरस्कार (2009)
16. दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एमेरिटास पुरस्कार (2009)
17. असम सरकार का सर्वोच्च पुरस्कार रत्न पुरस्कार (2011)
18. बटवृक्ष सम्मान (2011)

उपसंहार

असमिया साहित्य को विश्व साहित्य दरबार में स्थान दिलाने वाली एकमात्र असमिया लेखिका इंदिरा गोस्वामी है। उन्होंने अपने जीवन के सुख-दु:ख, वेदना और संघर्ष से जूझकर साहित्यिक जीवन को अपना कर धैर्य, साहस और मानसिक शक्ति का परिचय दिया है। उन्होंने एक शिक्षिका, शांति कार्यकर्ता, लेखिका के रूप में समाज, संस्कृति और देश को बहुत कुछ दिया। उन्होंने अपने लेखन से समाज की विभिन्न विसंगतियों का विश्लेषण किया है तथा उनका विरोध करते हुए समाज की उन विषमताओं पर बहुत ही सहजता के साथ प्रहार भी किया है। एक प्रकार से उनकी रचनाओं का आधार मानवीय संवेदना, सामाजिक विसंगतियाँ, नारी सशक्तिकरण और शांति की चाहत रही। उनकी रचनाओं का अधिकांश भाग भारतीय व विदेशी भाषाओं में अनूदित हुआ है। इसलिए हिंदी समेत अन्य भारतीय व विदेशी भाषाओं में भी उनकी रचनाओं को उतने ही चाव से पढ़ा जाता है। उनके साहित्य को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने ही जीवन की कहानी लिखी है। उनके संवेदनशील व्यक्तित्व और कृतित्व असमिया साहित्य जगत में अविस्मरणीय का प्रतीक है। उनके साहित्यिक व्यक्तित्व, प्रतिभा से हर कोई प्रभावित है और उन्हें अत्यन्त आदर के साथ 'मामोनी बाइदेउ' (असमिया में बड़ी बहन को बाइदेउ कहा जाता हैं) कहते हैं। पंजाब की प्रख्यात लेखिका अमृता प्रीतम ने कहा था कि-"Indira's maiden name is Mamoni Goswami.The peoples heart filled with joy and pride when they say our Mamoni." और अमृता प्रीतम के साथ सुर में सुर मिलाकर राणी गोहाँइ ने भी कहा है कि- "Yes, Mamoni is our dear Mamoni who bring pride to all the women folk of Assam." अत: इस प्रकार इस शोधालेख में इंदिरा गोस्वामी के साहित्यिक व्यक्तित्व पर विभिन्न दृष्टिकोण से विचार-विश्लेषण करने

का प्रयास किया गया है।

संदर्भ सूची

1. जिन्दगी कौई सौदा नहीं (आत्मकथा)- अनुवादक नीता बनर्जी, हिन्दी पॉकेट बुक्स प्रकाशन, जी.टी.रोड, शाहदरा दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1999
2. हृदयर तपस्वनी- राणी गोहाँई, ज्योति प्रकाशन, यशोवन्त पथ पानबाजार, गुवाहाटी, द्वितीय संस्करण- 2008
3. मामोनी रायसमर आभा आरु प्रतिभा- संपादक निकुमनी हुसैन, चन्द्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी, द्वितीय संस्करण- 2011
4. मामोनी रायसम गोस्वामी स्मरण सृजन मनन- संपादक विभा दत्त नेउग, किरण प्रकाशन, डि.के. मार्केट कमप्लेक्स धेमाजि चारिआली, धेमाजि, प्रथम संस्करण- 2012
5. डॉ. मामोनी रायसम गोस्वामीर सृष्टि आरु अनूभव- संपादक अनिता हाजरिका, असम साहित्य सभा चन्द्रकान्त सन्दिकै भवन, योरहाट, प्रथम संस्करण- 2013
6. इंदिरा व्यक्तित्व आरु साहित्य- संपादक आरु संकलन त्रिदिव गोस्वामी, असम पॉब्लिकेशन कंपनी कॉलेज हॉस्टल रोड पानबाजार, गुवाहाटी, प्रथम संस्करण- 2014
7. ज्ञानपीठ बँटा विजयनी डॉ मामोनी रायसम गोस्वामीर जीवन आरु कृतित एभूमूकि- लक्षेश्वर हाजरिका, Xahitya.org 15/09/2012
8. आधालेखा दस्तावेज- मामोनी रायसम गोस्वामी, चन्द्र प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी, आठवाँ संस्करण- 2011
9. आधुनिकतार हन्दानत मामोनी रायसम- ह्रदयानन्द गगै, ज्योति प्रकाशन, पानबाजार, गुवाहाटी, द्वितीय संस्करण- 2005
10. असमिया साहित्यर समीक्षात्मक इतिवृत्त- डॉ. सत्येन्द्रनाथ शर्मा, सौमार प्रकाशन, रिहाबारी, गुवाहाटी-8, दसवाँ संस्करण- 2015
11. असमिया साहित्यर पूर्ण इतिहास- डॉ. हरिनाथ शर्मा दलै, सरस्वती कम्पिउटार प्रेस, कॉलेज रोड, नलबारी, तृतीय संस्करण- 2012